k16.pdf This manuscript contains,

Page 1 - 5 : Shri Rama Hridayam

ततो रामः खयं प्राह हन्,मन्तम्रपस्थितम् ।

शृणु तत्त्वं प्रवक्ष्यामि ह्यात्मानात्मपरात्मनाम् ४४

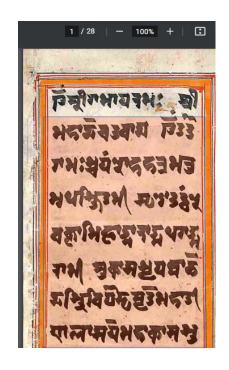
आकाशस्य यथा मेदिस्तिविधो हश्यते महान् ।

जलाशये महाकाशस्तदविष्ठन एव हि ।

तदनन्तर श्रीरामन पुत्र हनुमान्से खयं व और परात्माका तत्त्वः ॥ ४४ ॥ जलाशयमें दिखायी देते हैं—प च्छिन आकाश' और आकाशके ये तीन ॥ ४५॥ उसी प्रक

प्रतिविम्त्राख्यमपरं दृइयते त्रिविधं नभः॥४५॥ ।

१, जो सर्वत्र व्यास है। २, जो केवल बकाशयमें ही परिमित है। ३, जो



दातच्यमैन्द्रादिष राज्यतोऽधिकम् ॥५२॥ श्रीमहादेव जवाच

एतत्तेऽभिहितं देवि श्रीरामहृदयं मया

सगे २] वालकाण्ड योऽतिअष्टोऽतिपापी परधनपरदा-ऐसे ही हैं॥ ५५॥ जो को रेषु नित्योद्यतो वा पापी, परधन और परक्षियों स्तेयी ब्रह्महामातापितृवधनिरतो चोर, ब्रह्म-हत्यारा, माता-पि योगिवृत्दोपकारी। हुआ और योगिजनोंका अ यः संपूज्याभिरामं पठति च हृद्यं श्रीरामचन्द्रजीका पूजनकर । रामचन्द्रस्य योगीन्द्रैरप्यलभ्यं पदमिह लभवे पाठ करता है वह समस्त देवत स पूज्यम् ॥५६॥ प्राप्त होता है जो योगिराजोंकं

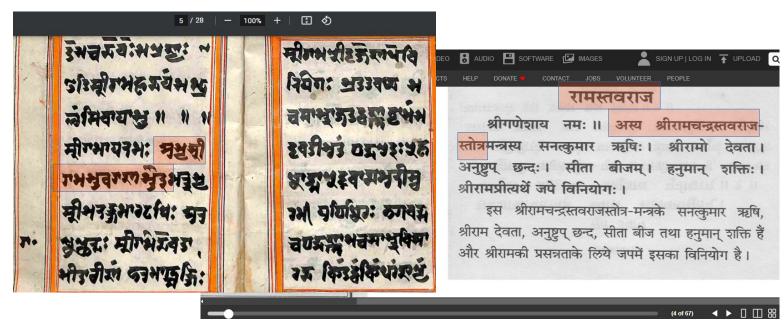
> इति श्रीमद्रप्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे बालकाण्डे श्रीरामहृद्रयं नाम प्रथमः सर्गः॥१॥

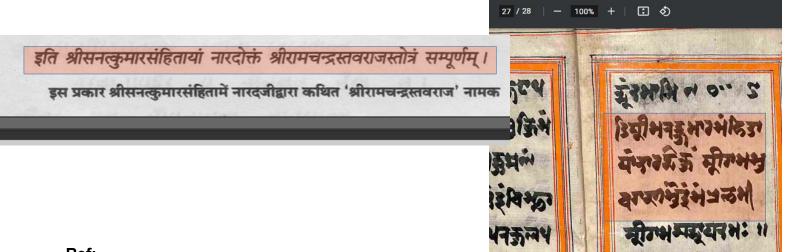




Ref: https://archive.org/details/AdhyatmaRamayana/page/n25/mode/2up

Page 5 - 27 : Shri Rama Stava Raja Stotram





Ref:

https://archive.org/details/RamSravarajStotra/page/n3/mode/2up

विम्रीमभाग्यसः भद्रज्ञ राज्य विराह रभः **स्वयं**यद्धः हुन भथाभुगभ मण्यन्त्रहेप वराभिहार्गर्भणा गभ ज्ञानध्यविक मित्रिक कि सुरेभदार पालामयभदकाम सु

दवाद्वित्राप्त श्रीकि श्वाष्ट्रभथां महारहित णकः रह्यसिव्या इमक्प्रक्षं उद्यापनभी नहसञ्चराविश्व इसे केरिए विश्वे । कियर भाग्रज्ञ भविद्यानि काशिल भाषाकुर्वश्वर

रूपीवहमारक्षाः महभव अध्यक्ष विद्युक्त सम्बद्ध स्याहित द्वारहा विकल्पः अविश्वित र अलेन में कई श्रीश हु ३३ भक्षाप्तरहो **उभारभक्तरभग्नेव**

ज्याद्य के द्वार के स्टूडिंग कहनमध्रतः उद्धि **मुक्रदेश्वर**म्हरवन भेमयः १३ दिस्यभ म् जैभक्षरायेपभक्क भस्तिविभागनंदिम भगाउपभहरूभ नम ह्रवस्ता श्रामण्य

मरेगिप उद्रेग्दर्ध्ह द्रयंभभगद्रतभयवभा वाद्विधाउवायभ म्किदीरयमरायन हैया इस्ड स्मिपा एउँ। एकभी मीभदा ग्रतः अवश्या । १३३ विकि उमिन्दीरभहरूपभ

T

या मिराहरसंहर्ष विरंपापमेणभी भवा मुभेणका घंड भवव ग उभर्दश यः ४०इ अंक्राभभक्ति अंग यः व्यानस्थापान वद्रलयशिष्ट्रांथ व महेक्सभग्रेदेगभर्थद

मरंग्रम न शेड्स विषयीधा सन्धार प्रिट्टि किउंदा सेपी इ श्रिकार्शकर विवि उद्यापदर्भ यः भंभ्याकीयुर्ध म्यासम्बर्धिकार्या क्रिमार्थ्या

उभग्रज्ञां भथकाः न उतिमीगभद्द प्रयम् लेमिक्यभु ॥ ॥ ॥ म्राभागासः मध्यी गभभवग्याभुउभव्ध मीभरकुभग्रद्धिः श्रु श्रुश्चरः मीरभेरवर भीउरीयं दाभाष्ट्रिः

मीगभरी हे हे राजे दि विवेगः अउउद्य भ चमान्य जउदेश्र हा भभ ह्वरीभंड वस्थरः यह अग्राभ इक्यमन्त्रि उभी यृष्टिश्चाः कगवम चण्याः भवमाध्यमा रम किउइकिपार्ट

किं एवं भिज्ञभणन्भ म्हाभश्चभारत् मभित्रभाउभ सम्हभः वद्गराभद्रकाम् प वहाभिउह्यः यस्ट्य ज्ञान्य मार्गित्र विकास मिबभी उद्याधारभाउईके वसुण्यक्षणं सीरभ

रिपांक्ष्युग्रक्त्य सं श्चिम्भ ब्रह्हिप पञ्जभितिवस्यिकिः मीरभग्भि उगार वेरा पित्रमध्यः उधार्भाक मुज्जिम्बर्गियान मयः भुवासापगर्भ नथन्त्रवणभाग उद्यंभ

प्रकृतिकविष्टा १४३५। रं उपश्याधिमभनंभवा जिल्लीक उन्ने काविस्क विम्भन्भच अभाइ गी वं विद्वादनकारिक रोक्डलभाग्नभ नभ स्ट्यवहाभगभग्धं एगस्यं भ्रमेष्ट्रगारे

रङ्गभञ्जभष्टग भार रूका रेग्निय स्थित भनेषुढं उभ्रष्ट्यान्य म्,नानाग्रह्य विश्वित्रभी भाग्यहरमग्रमहस् मिट्डसम्भ धिइन्द्वग उंग्भं उस्वीलभाण्य ठं केभनद्रीयमाना

वावेइइलचगणाभ क्षेत्रकार अजीक संकित्र एनविरास्ति रङ्ग्रेव यकप्रश्रक्त अंतर्भिक्ष ३भ रइज्यलभक्षर किट्भर्ग्नर्भ मी वर् केश्व हेर्ग्स भजादा रिप्रमेकिउभे कित्रुरेनुभ

भागकु भार् कार्यन वरं गणवित्रक्रंगतः रभभीषद्भिरन्स 3四利型型料13.46亿 भानाहिर हिडेश कर् गगमकश्रीमिर्गरा नजिपन्भ येगमञ्जूष िराउँ येशिभयेग राय

T

क्रम भग्रहरउसेनीभ इसऱ्यि डिम भि नि उभ विद्यानगरीमिश्व गञ्चिकत्ररः येगमः राग्य हे इस्यभारभ दिसभी विञ्चाभिइव भिष्ठ फिरविः परिभे विउभ भन्नकामिभिर

म्युरिगिर इस्मिना भा गर्भवध्यवर्गीरंग्न च्याविमाग्यभी भद्भवा याउनवीरंगभगगीय न ग्रम्भ भवसभ्य गुरु ग्रुभारं इकरभग्राभ केभन्दानग्रमणनग लणंदितं विश्वापाउच

विश्वपद्धिति उभने विद्वे विश्वपद्धिति उभने विद्वे **रहप्रभारमहरूभिरिव** दःभगग्यः भवनक क्रिंग्ग्य अस्य अस् इत्रभी गुरुक्त लिथ्हे राम्ब्यम्बर्धाः " प्रक्रिया रिहेय प्रकृति मिमर्क युर्केश्पक लेकेउर्भंगित्रपष्ट् विद्वार उविभन्न युर र्वभ्द्र इपेश्वरापक देश सीगभगम्द्राभ क्रियंच्यारागभभद **डर्भि " मीम**हर िलंग्सं मिस्यानक थि गुरुभ दलदिश्रभी

मानंत्रलह्नपंत्रपत्रियं मीरव्रहेड्यान में राग मेहरभस्त्रभ भङ्गक्रा वान्य विष्या विषय यं वाभग्रेव्साग्डितिभ रामिरणनेद्रीरं गीविज् नेपि विश्वनिपीरण नभ नेदाभ गिपानंगिपरीवा

रंगे थक इसभ स्डाभ विद्याद्वत्रशककंगभं उद्गर्गम्यभ गेरी भिक्षभक्षी ले वे गर्व म्बरघरभी कभाउपेक नायनेक भिनीक भड़े विक्रभ भग्नवभवगवा वेभण्यं भक् र भुग्भी

मीयां चीकां मीमं मीन वर्भभगग्रा इजीमङ्ग विक्रित्र विक्रिति हो इस ल मीरभिदेशकरा इंभड़ ने की अरेगा भा मुद्रिश्चनगर्वे विद्वा इस्ट्रियां भक्तिवं पम्निर्ध जानाभी भित्र च्यम क्षेत्रमंत्रकना अहिकाज्ञ इं,कभन्नाप्रवं भिद्रभनेभभभीरिह बुडशंकन्यस्था विश्वा भिर्धियम्बसुरारीय उत्रुअ। यहामयस्भ मधयद्भिपान राज्य भर्भविरिगाउँ ग्रेंमाण

गडवद्भल भवज्ञमथ दर्भविकीयलकार्य ममरीवदरं सर्वे भव केम्द्रम्भ कानियभव वंबीरंभगीव मिरुण्युष्य भा उभ्याच्यस्य सिव उद्यमध्यभा मुर्भ जंगामचंडाकंड्ज इ

निक्ता भवद्यार्षेत्र श्रंभचपारंभराउरभ भविक्यलक प्रश्नेतिक वं च्छाःपाभी निगभषं निगरुभे निश्व है निग्रस नं निरुष्क्रेरिगक्रवंभन्ने उउभभः धारमा धारकाउ ग्रहभद्दारामग्रह

•

भनभामगभानिहंभू भाभग्ने अर्भ सदभ **उल्लाहर्म्य अन्तर** भिवासी नभाभभुष्मी क्रांभभयंग्रम्डद्याभ नभेभुनभग्नेग्य्होऽध भउयनभः नमेश्वरभञ् वायसागस्यस्थाना

नभवें यज्ञानस्ययोगनी वृज्ञवर्यान भाषाभय विरुभुष प्रभाव राज्यभिव उभ वद्रभद्रभद्रमन् मक्केमकायक्रमे " उद्धायम्बर्भनेश्ल मलष्टाभाषाभाषान् व गाउन्भनीस्भारभभ

उदंभायसंभागित क्षाय भूगद्रियाभग्भजान्द्रभ यपंभवभः । अवेन्द्र वंवयविद्याध्या हम्म् वियभ्यक्षभ विगार्कभवगउभुक्रभ वभाभिरभंडभभःभर भुग्ने विरुद्धिनिःश्री

भिनित्रेनिगम्पंनिस न्नभर्धक निरंप्रवीन चिषयभुक्षंविग्रुरंग भगडंडरुभि " क्वा विभावता गुरंतका वियंहन इति स्टीप क्राधिन वे क्वरिश िंड**्सिंग्संट्वरंग**वे

इस्कृतिक

ह भराजिपर्भभाग जीं भट्टें सिक्ट र के भवंश इपभ भरंमिर्यमात्रिभ यमग्रह्मभनाउनगभभ दहराभ न करहित् याकारणभन्भीयंक्षिं नगलक्शनाय उन्क वहकरणभय

इंडेक्स्ड्रभंगभभद ठर्णभ ल इनिजनधं नन्भीमन्ज मुमुविर महाउ मीगभगभंदर भारत उभारत राज्य इंडरमि । वस्त्रवे इंकविभीमिअने भने ह भष्टाश्रीमनुभक्षभ

मधी प्रांतिम् लभाव है पंत्रभाभिनमं उसका प रभुड़ र्र- अस्थवर **到中华中部** विविध्वान न अप्रमा त्रभवस्यम् यं परण्याभभडे हर् भि ५ ३६५३५७५५

नेराण भेरकाभागा उविद्यमं गरुधिरा क्राधिभद्रलग्रं वि ज्ञ ज्ञान भरे दर्दि जिका दिर भेर भवेश राष्ट्रेकिंग्रिय र र भय भज़र जमधिश क्रिपांडेकची सुरभाभ

गभंडभभः धानुन्तं ५३ येग्यू भड़े : मरभहभा र्नगण्लिक्वभाष मनं नडिभिनिट्रंगण मक्रावंभाग्यस्य इस भाषक्षा । विद्वा इंशिवृश्यां विर्यान लम्भीमंग्भवंगन्ध

माण्युभर जभरते भ विक्रियं मध्ये रुशि १७ मम्बन्स रविकाजीवभाषित्र भव्रतभाषा हा भभ **भभभुभक्ती३अभ**प रभाजाग्यां विश्वभ इंडराभ न भरीड

गुरु भाग्य लग्ने वृद्ध निषिक्नामरामद ३ भग्यां यदा अंभित्रं नभाभिग्भे भद्र उभद उभी - व्यक्तियु नमृद्यदेशस्त्रः अवा चित्रकारियुक्तः मेवहभवग्भनसन

उपभाग्ययः भिद्धः भाराज्ञभन्त्रभूवा वि अवग्रम् वाचार ४ ग्रन्थित वर्ष मुभाभुक्यण्य बन्द्र व भेश्र वेश्य यकार बाभगा चुचा किसा लो क्रिय्रक्रिक्टिः भक्त

मिभारित्र अभेवर ५ अनुव वभवेष्ठेश्वः क्लम्बर्करम् उरं उर्व्यामधित्वेत क्रमेवरधनक्रम भप्रजी र्गभभूज्ञ नगर्ने इ उवार्भाः असादा र अभूवह अवग्यन्य म्यक्ति इंदेर्ग्य क्षेत्रप्रवेशम भाराधिरार चाक्राउडभवर भवल्य भचमख्याभुज्ञहभव अधिकाद श्रमकार्य क्रोडिडभवयमधेउभ ल रुभवज्ञक एक रहे हैं है त्रकिष्पुर माउंभव

गाउभक्तभाग्यक्रभगाउन गर्लीवनिमनग्रेन्यू न्भ भिर्णगद्धिभी " स्वि र्म्यः ३३:५भ३:ज् ग्भे च्वामभारभद्भव उ सेश्विभी माजन हुली ध्वनभाग्ने म्रिक्टमः याम्अस्मिभवद्भाग

भक्रमण्याचे वस्तिः मन्दर्व अपने सभी भित्रं ण्टेड्नुस्ट्रं गुउग्जेदंश्रीभ भड्ड मभ दले स्प्रस्पिश भदलग्रेम ग्रह्मेश **हलाह्यभट्टमभ**ढ लुखः महमेभक्ल **可证:全在在身地下自** राउ महसभढनंभव ड व्यक्तिरम्भरहर राग्नेस्ट्रेस्स क्रिन्दिराधव उउःभ रभभंदीरिंग्भः प्रस् भराग्य भागवहभद क्रामक्षंत्रमाभ

इ यह्यप्रोधाउभवभ रभाउद्धिष्टि मीना क्रः न वरस्याक्ररभ रवर्षस्यम्ब्रहाके भाउउभभास उम्प्रिय गष्यग्रं ५ हेर्दः ५वः हेंचयभेवयाचे हम हमः उद्यभीक्रि

रभः स्याभ्यव विश्व भ विरम्भभदाउँमी भक्तियुक्त वियुक्त महैं उभभने हरे हैं व भक्षालंडचा अनुद्वा नंसागजान्यभाष्ट मध्य उडिमीम्थर वर्ष भेदरम्लभ ३३भ

भर्मिक्ष्यभभाष्ट्रम विक्भिक्रियंग्रहं कवि उर्ज्ञ ४३ व्यक्त रंभव भउभभे ग्रहाङ्गहारभं विद्वे उव अन्य की । अर याः थञ्चारकार्ष्याः भन्न-एपयान्यः इक दर्द्रायभाषिउद्यभा

निरुद्धिय भन्दश्रेष्ट्री मधानग्रह न्यागु उपन म निवण्ड्यपारि मराग्राणिय भने प्रभृहुर्थाचे : कृत्याचु उम्बेह्यः भारभवाति かとなどのからん

MEDES (द्वार क्रम् उर्जनहें भर्म संभट्न विकिन्दिया गर्भभर् पार्क्ष कि विश्वविद्य ३ अगर्भध्रपंग्र इभर्भिदेशु ७० मीगभमगुरअभर मस्बद्गस्य मुगभा भ

नायकरप्यवस गर्गाव गर्गरभवद्भर गभड़न् माभेदभम् उत्तरः मरण गडिम्म " वैक्रदीश रिउ: भर्भ भउने दे भ भद्रभक्षप्रभष्टेशच्यक धु-भन्भालभयवीर

मन्दरिश्वं इक्निन्। उन् हेमभिक्ति भन्दाएउ हरामिंडाभारतरा भेडर्ल्ड्यन्स ४४ गभेग इकिगैर जिल्ला रंके बादमानितं भीउ लकुउक् भक्षणभभन्। भिक्तभरश्रीवर्ड भगी

n

कादियां वाला संस्थालभग विद्या भिर्भगमग्रिभरितिः संभ्रयभारं रहेश ७५ भक्नगुलिरणरंचिति िक्यभारमणगिव। विणितभारंगकाभेज्ञा भान भक्रिउद्धवयान्।

भीउयामिकभागे भाग हमपिभागव्य गभारि णरंग्यवग्रवधाउभभ कभारभाद्भरकगाउँड रंडेराभण्यभाषयं माड उलमभक्तभभक्त्य एस व्हरणमिश्राधभा म्बाभाग्रम् ७१ एम

ग्रभनंबर पिर्जिए थ विद्या किथा सम्बाध क्रुंश्वकीवभूक्रमं विभनकभननेइविभूज ब्रीलपएश्री उपन्जलप विरंदानविद्यनुनेरंहनर जलमित्रेड्डिभिभर्ग कल इम्भिरगुल्भभन्रं गभग

मुरम्भाभ न ०.. द उद्यीभवडु भारभंकि उर यंग्रहें जीग्भेन वग्राभेर्भेत्रभेत्रस मीग्भम्ययाभः॥ **विद्यास्त्र मार्थिक** रविधर्भ क्षाइश्वराध

कुलेग्वस्ड्री अधार् उरकाषाइभगद्वा लभव जग्जिपानुन इ:सग्यान्त्रवश्रम दकेरिएक्स नीम् उत्रागः दिस्सपि । ३:५७३भंग्वीग्मः ल यीगभठत्याभः ॥